P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का हिन्दी साहित्य के विकास में योगदान

अनुपमा त्रिपाठी
अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
डी0बी0एस0 महाविद्यालय,
देहरादून, उत्तराखण्ड
भारत

आशुतोष मिश्र
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजकीय महाविद्यालय,
मंगलौर, हरिद्वार,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

हिन्दी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में युगान्तर उपस्थित करने वाले, कवियों तथा लेखकों के प्रेरणास्रोत, खड़ी बोली हिन्दी की भाव–सम्पदा तथा उसके भाषा–वैभव को एक आदर्श, परिष्कृत, प्रौढ़, अनुशासित एवं सुस्थिर स्वरूप प्रदान करने वाले युग–निर्माता साहित्य साधक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का हिन्दी के भाग्योदय में अपना अप्रतिम स्थान है। उनके गम्भीर, आदर्श एवं उदात्त व्यक्तित्व तथा व्यापक कृतित्व मे सर्वत्र अनुरूपता के दर्शन होते हैं।

मुख्य शब्द : आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य।

प्रस्तावना

इन्डियन प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित होने वाली "सरस्वती" पत्रिका के सम्पादक रूप में आचार्य द्विवेदी की साहित्य–साधना अपनी बहुमुखी शक्ति के साथ प्रकाश में आती है। "सरस्वती" पत्रिका सामान्य रचनाओं को प्रकाश में लाने वाली पत्रिका नहीं थी, वरन भारतीयता, देशप्रेम एवं समाज–सुधार की भावना से ओत प्रोत कवियों एवं साहित्यकारों के लिए एक आदर्श शिक्षण संस्था का कार्य कर रही थी।

"निज भाषा उन्नति" तथा राष्ट्रीयता, देशप्रेम एवं समाज सुधार की भावना भारतेन्दु युग में ही अंकुरित हो चुकी थी परन्तु उसका पल्लवन एवं पूर्ण विकास हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से द्विवेदी युग में हुआ। भारतेन्दु युग में गद्य शैली पर आधारित रचनाएं तो टूटी–फूटी एवं अस्त–व्यस्त ब्रज–मिश्रित खड़ी बोली में होने लगी थी परन्तु काव्य रचना ब्रज भाषा में ही चल रही थी। आचार्य द्विवेदी ने खड़ी बोली को काव्य–भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने तथा उसे परिष्कृत, सुसंस्कृत, व्याकरणसम्मत एवं सशक्त रूप प्रदान करने का गुरूतर दायित्व अपने ऊपर लिया। प्रारम्भ में "सरस्वती" पत्रिका के लिए सामग्री का अभाव रहा। जो कुछ सामग्री उपलब्ध भी हो रही थी, वह भाषा एवं व्याकरणगत त्रुटियों से परिपूर्ण तथा वस्तुपक्ष की शिथिलता लिए होती थी। द्विवेदी जी एक ओर "सरस्वती" के लिए रात दिन लिखते थे तथा दूसरी ओर कवियों एवं लेखकों की रचनाओं का वस्तु एवं भाषागत संशोधन करते थे। आचार्य द्विवेदी जैसे कर्मनिष्ठ साहित्य–सेवी को पाकर हिन्दी अपने भाव–सौन्दर्य तथा भाषा–वैभव में धन्य हो उठी।

हिन्दी साहित्य एवं भाषा के "कायाकल्प" हेतु द्विवेदी जी का प्रथम संकल्प था ब्रज भाषा के स्थान पर शुद्ध, परिनिष्ठित, प्रांजल एवं सुसंस्कृत खड़ी बोली की प्रतिष्ठा। खड़ी बोली को ब्रज भाषा के दलदल से निकालकर प्रौढ़ता एवं सुनिश्चितता प्रदान करते हुए राष्ट्रभाषा के पद पर अलंकृत होने योग्य बनाने का प्रथम श्रेय आचार्य द्विवेदी को ही है।

साहित्य सुधारक की भूमिका में

हिन्दी की भाव–सम्पदा को आदर्श, गम्भीर एवं गरिमामय स्वरूप प्रदान करने के निमित्त उन्होंने साहित्य से श्रृंगारिकता के पूर्ण बहिष्कार का संकल्प लिया। रीतिकाल से चली आ रही श्रृंगारिक अश्लीलता को समाप्त करने के प्रयास में द्विवेदी जी इतने सतर्क हो गए कि उन्होंने "प्रेम" और "सौंदर्य" को भी हिन्दी साहित्य से निष्कासित कर दिया, जिसके आवरण में श्रृंगारिकता के छिपे होने की संभावना थी। मैथिलीशरण गुप्त के "साकेत" की पाण्डुलिपियों में संशोधन, निराला की "जूही की कली" कविता को उपेक्षापूर्वक सरस्वती में छापने से इंकार कर देना तथा "कालिदास की निरंकुशता" शीर्षक अपने लेख में संस्कृत के कवि कालिदास के अमर्यादित तथा अविवेकपूर्ण श्रृंगार–वर्णन पर कठोर प्रहार करना उनके श्रृंगार–विरोधी संकल्प के सशक्त प्रमाण हैं।

साहित्य–रचना हेतु, आदर्श, मंगलमयी, भाव एवं ज्ञान सम्पदा की प्राप्ति के लिए आचार्य द्विवेदी ने कवियों एवं लेखकों को "अतीत की ओर" अर्थात संस्कृत साहित्य की ओर चलने की प्रेरणा दी जहाँ ज्ञान, भक्ति, आध्यात्म, संस्कृति, आदर्श चरित्र एवं सच्चे निष्कपट प्रेम का राज्य है।

निबन्ध लेखन में नवीनता

द्विवेदी जी ने जिज्ञासु लेखकों को पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित किया। देश–विदेश के साहित्य एवं ज्ञान–विज्ञान से प्राप्त सामग्री के आधार पर उन्होंने समीक्षात्मक लेख लिखे तथा समाज में व्याप्त परम्परागत भ्रान्तियों, रूढ़ियों एवं अज्ञानजन्य ग्रन्थियों को सुलझाने का प्रयास किया। "हंस का नीर–क्षीर–विवेक" उनका एक निबन्ध है जिसमें अमेरिका में किए गए प्रयोगों का उल्लेख करते हुए द्विवेदी जी ने भारतीयों की अन्धप्रवृत्ति की आलोचना की है जो बिना परीक्षण के परम्परा से चली आ रही निराधार बातों को सत्य मान लेते हैं। वस्तुतः हंस पक्षी सरोवरों में पाए जाने वाले मृणालदण्ड को जल से निकालकर उसकी ग्रन्थियों से निकलने वाले दूध जैसे तरल पदार्थ का पान करता है न कि जलमिश्रित दूध को अलग करके पीता है। इस वैज्ञानिक एवं तथ्यात्मक निबन्ध द्वारा द्विवेदी जी ने इस भ्रान्ति को निर्मूल सिद्ध किया।

द्विवेदी जी सच्चे अर्थों में आचार्य थे। उनका व्यक्तित्व महान था, जो उनके निबन्धों में झलकता है। मात्र "सरस्वती" पत्रिका के ही लिए नहीं, बल्कि अन्य पत्र–पत्रिकाओं के लिए भी वे संशोधक एवं लेखकों के प्रेरक रूप में प्रतिष्ठित थे। उनका आचार्यत्व जहाँ एक ओर सम्पूर्ण हिन्दी जगत पर छाया हुआ था, उनका साहित्यकार रूप भी कुछ कम नहीं था। उन्होंने कविता, निबन्ध, समालोचना, भाषा, व्याकरण, इतिहास, अर्थशास्त्र, प्राचीन साहित्य तथा संस्कृति, वैज्ञानिक आविष्कार, अनुवाद आदि विभिन्न पक्षों पर अपनी सशक्त लेखनी उठाई तथा सफलता प्राप्त की। उन्होंने लगभग अस्सी ग्रन्थों का प्रणयन किया तथा भाषा और व्याकरण से सम्बन्धित अनेक लेख लिखकर कवियों तथा लेखकों का मार्गदर्शन किया। उनकी उल्लेखनीय गद्य–रचनाओं में "नैषधचरित चर्चा", "हिन्दी भाषा की उत्पत्ति", "कालिदास की निरंकुशता", "साहित्य संदर्भ", "रसज्ञ रंजन", "सम्पत्ति शास्त्र", "साहित्य सीकर", "विचार विमर्श" आदि का विशिष्ट स्थान है।

भाषा – शैली का व्यापक दृष्टिकोण

"भाषा और व्याकरण" शीर्षक अपने निबन्धों में द्विवेदी जी ने व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध भाषा के आदर्श स्वरूप की विवेचना की है। "हिन्दी की वर्तमान अवस्था" जैसे लेखों में उन्होंने हिन्दी भाषा की शब्द–ग्राहकता पर विचार करते हुए उसका एक सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत स्तरीय रूप निर्धारित किया है। "हिन्दी शिक्षावली" की समालोचना के माध्यम से उन्होंने अत्यंत ओजपूर्ण शैली में भाषागत दोषों की ओर लेखक का ध्यान आकर्षित किया है तथा "हिन्दी नवरत्न" की विस्तृत समीक्षा द्वारा हिन्दी के ख्याति प्राप्त लेखकों में पायी जाने वाली त्रुटियों को सुधारने का प्रयास किया है।

आचार्य द्विवेदी द्वारा लिखित अनेक काव्य तथा अनुदित रचनाएं भी साहित्य की दृष्टि से कम महत्वपूर्ण नहीं है। एक सफल निबन्धकार, आलोचक, अनुवादक एवं सम्पादक के रूप में हिन्दी के प्रति उनकी सेवाएं अविस्मरणीय रहेंगी। निबन्धकार के रूप में अपने पाठकों का ज्ञानवर्धन उनका प्रमुख लक्ष्य रहा। अतएव उनके निबन्धों में विषय–विविधता, सरलता एवं उपदेशात्मकता के दर्शन होते हैं। उन्होंने हिन्दी में गम्भीर साहित्यिक निबन्धों की परम्परा का उद्घाटन किया, परिणाम स्वरूप प्रौढ़ चिन्तन एवं गम्भीर जीवन दर्शन से सम्पन्न – माधव प्रसाद मिश्र, सरदार पूर्ण सिंह, मिश्रबन्धु, पद्म सिंह षर्मा, डॉ0 श्याम सुन्दर दास, बाबू गुलाब राय आदि प्रतिभाएं निबन्ध एवं आलोचना के क्षेत्र में अवतरित हुयी और यह परम्परा आगे भी चलती रही।

समीक्षा के क्षेत्र में भी आचार्य द्विवेदी का अपना एक विशिष्ठ स्थान रहा। उन्होंने पूर्व प्रचलित रीति के सिद्धान्त का परित्याग किया तथा उपादेयता, जनहित औचित्य एवं दोषमुक्त भाषा को समीक्षा का मापदण्ड सुनिश्चित किया। "हिन्दी कालिदास की आलोचना" नामक पुस्तक लिखकर उन्होंने समीक्षा को एक नई दिशा प्रदान की तथा निर्णयात्मक, व्याख्यात्मक, परिचयात्मक, तुलनात्मक, संपादकीय एवं प्रेरणात्मक पद्धतियों को जन्म दिया।

आचार्य द्विवेदी को विभिन्न विषयों के लेखकों को दिशा–निर्देश करना पड़ता था, अतः विषयगत विविधता के कारण उनकी अभिव्यक्ति–शैली के भी विविध रूप दृष्टिगत होते हैं जिनमें व्यंग्यात्मक, आलोचनात्मक एवं गवेषणात्मक शैलियाँ प्रमुख हैं। शैली विशेष के स्वरूप का अनुसरण करती हुई द्विवेदी जी की भाषा भी कहीं सरल, हास्य–व्यंग–विनोद से युक्त, तो कहीं गम्भीर, संयत, तत्सम, संस्कृत मिश्रित तथा तथ्य निरूपण की क्षमता से युक्त दिखाई पड़ती है परन्तु द्विवेदी जी की अभिव्यक्ति–कुशलता भाषा में कहीं भी दुरूहता उत्पन्न नहीं होने देती।

द्विवेदी जी की कुछ प्रारम्भिक रचनाएं सस्कृत पदावली से युक्त तथा पंडिताऊपन की स्पष्ट झलक देने वाली हैं जिसमें अमृत लहरी, भामिनी विलास तथा बेकन विचार रत्नावली। "स्वाधीनता की खिचड़ी भाषा" में उन्होंने टीकाकार की शैली अपनाई है।

खडी बोली के प्रवर्तक कवि

द्विवेदी जी की साहित्य–साधना के विविध रूपों में उनको सर्वाधिक महत्व प्रदान करता है – उनका भाषा संशोधक रूप, जो वस्तुतः युग प्रवर्तक के रूप में उन्हें अमरत्व प्रदान करता है। उन्हें पाकर खड़ी बोली अपने शुद्ध, सजीव तथा सशक्त रूप में मुखरित हो उठी। वे व्याकरण सम्मत, सरल, सुबोध तथा रसानुकूल औचित्यपूर्ण भाषा के पक्षधर थे। उन्होंने कवियों तथा लेखकों की पाण्डुलिपियों के संशोधन के माध्यम से, पत्रों द्वारा त्रुटियों की ओर उनका ध्यान आकर्शित करते हुए तथा विस्तृत आलोचना के माध्यम से सम्पादक के इस गुरुतर दायित्व का निर्वाह किया। विराम चिन्ह, हलन्त चिन्ह, मुहावरों के प्रयोग तथा वाच्य, लिंग, वचन, कारक, सन्धि, समास, प्रत्यय आदि से सम्बन्धित त्रुटियों का संशोधन एवं लेखकों

का मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने अपने "आचार्य" पद की सार्थकता सिद्ध की। भाषा की प्रकृति को समझे बिना अंग्रेजी तथा संस्कृत की अभिव्यक्ति प्रणाली एवं शब्दावली, ज्यों की त्यों हिन्दी में रख दी जाती थी तथा अभीष्ट अर्थ नहीं दे पाती थी। द्विवेदी जी ने व्यंग्यपूर्ण टिप्पणियों तथा लेखों के द्वारा इन दोषों को दूर करने का प्रयास किया।

आचार्य द्विवेदी की रूपक – योजना अत्यंत सार्थक, औचित्यपूर्ण एवं कथ्य को स्पष्ट चित्रित करने में सहायक होती है। उनकी भाषा में अवसर के अनुकूल संस्कृत, फारसी तथा सर्वसाधारण की बोलचाल की भाषा के शब्द मिलते हैं। इस विविधता के मूल में कथ्य को बोधगम्य बनाने का प्रयास ही निहित रहता है।

आधुनिक हिन्दी काव्य को भाव एवं भाषा दोनो की ही दृष्टि से आदर्श एवं गरिमामण्डित बनाने का श्रेय आचार्य द्विवेदी जैसे उदात्त व्यक्तित्व – सम्पन्न युगसृष्टा महापुरुष को ही है जिन्होंने युग के प्रतिनिधि कवि मैथिलीशरण गुप्त को अपनी आदर्शवादी विचारधारा के अनुरूप ढालने का प्रयास किया। उन्होंने सियाराम शरण गुप्त, श्रीधर पाठक, रूपनारायण पाण्डे, रामनरेश त्रिपाठी, लोचन प्रसाद पाण्डे आदि कवियों को जन्म दिया जिन्होंने राष्ट्रीयता, देशप्रेम, मानवतावाद, आदर्शवाद, नारी – स्वातंत्र्य तथा धार्मिक समन्वय की भावना को बुद्धिवाद के स्तर पर उतारकर, जन जन में एकता का मन्त्र फूकते हुए, भारत – जननी को परतंत्रता की श्रृंखला से मुक्त कराने का आहवान किया। मैथिलीशरण गुप्त की "भारत भारती" में राष्ट्रीय चेतना का सशक्त स्वर मुखरित हो उठा। जन–जन का ध्यान भारत के अतीत गौरव की ओर आकृष्ट हुआ जिसे विस्मृत कर देश दासता की अधोगति को प्राप्त हुआ था।

आचार्य द्विवेदी की राष्ट्रीय एकता की भावना कविवर रूपनारायण पाण्डे के स्वर में फूट पड़ी –

जैन, बौद्ध, पारसी, यहूदी, मुस्लिम सिख ईसाई।
कोटि कण्ठ मिलकर कह दो, हम सब हैं भाई–भाई।।

कविवर माखनलाल चतुर्वेदी की कविता "पुष्प की अभिलाषा" तथा "मरण त्यौहार" के आह्वान पर मातृभूमि की मुक्ति हेतु बलिदान की भावना भारत के जन जन में अनुप्राणित हो उठी। श्रीधर पाठक के प्रकृति चित्रण में भी देशप्रेम का ही स्वर संचरित हो रहा था। उधर समाजवादी विचारधारा से प्रभावित होकर "हरिऔध" की राधा तथा मैथिलीशरण गुप्त की सीता सेवा तथा करूणा की देवी एवं सामान्य कृषक बाला के रूप में अवतरित हो उठी।

निष्कर्ष

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का हिन्दी साहित्य में विशेष महत्व है इसी कारण उनके समय के नाम पर द्विवेदी युग नामकरण किया गया है। भाषा तथा व्याकरण के नियमों तथा विराम चिन्हों आदि का ऐसा प्रयोग किया जैसा कि पूर्ववर्ती लेखकों में अभाव था। उन्होंने भाषा को परिष्कृत करने की इच्छा और संकल्प लिए और उसे उस स्तर पर पहुँचा कर ही विश्राम किया। इसके परिणाम स्वरूप इस युग के अनेक कवियों, लेखकों ने खड़ी बोली के विकास में परिमार्जित भाषा का प्रयोग कर खड़ी बोली को सर्वोच्च स्थान प्राप्त करवाया। मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय इसी काल के श्रेष्ठ कवियों में हैं। इसी काल में "सरस्वती" पत्रिका के सम्पादन से भी खड़ी बोली लोगों को प्रोत्साहित करने लगी और प्रचुर मात्रा में खड़ी बोली के साहित्य का सृजन कार्य होने लगा और सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ इसमें प्रकाशित होने लगी।

युगीन काव्यधारा के इस सशक्त स्वरूप में युग–निर्माता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की देशभक्ति, राष्ट्रीयता एवं सामाजिक एकता की विराट परिकल्पना ही कार्य कर रही है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के मेरूदण्ड स्वरूप हैं। उनकी कीर्ति सदा अमर रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी – रामेश्वर उपाध्याय, नई दिल्ली

महावीर प्रसाद द्विवेदी – डा0 उदयभानु सिंह, राजकमल प्रकाशन

महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के श्रेष्ठ निबन्ध – सम्पादक विनोद तिवारी, लोक भारती प्रकाशन